युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 32 कुल पृष्ठ-8 29 मार्च से 4 अप्रैल, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 चै.शु.-13

वैदिक मिशन मुम्बई के तत्वावधान एवं आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सहयोग से आयोजित वेदों में शिक्षा विज्ञान विषयक संगोष्ठी महत्त्वपूर्ण निर्णयों के साथ हुई सम्पन्न

6 से 8 जुलाई, 2018 को होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन, हरिद्वार में देश-विदेश के सभी गुरुकुल सम्मिलित होंगे

– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

वर्तमान शिक्षा प्रणाली का विकल्प आर्ष शिक्षा प्रणाली ही हो सकती है

– प्रो. विट्ठलराव आर्य

केन्द्र में वैदिक शिक्षा बोर्ड बनाकर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को मान्यता दिलवाने एवं विशेष आर्थिक पैकेज (योजना) के क्रियान्वयन की माँग उठाई जायेगी गुरुकुल महासम्मेलन में

– स्वामी आर्यवेश

वेदों में शिक्षा विज्ञान के आधार पर वर्तमान शिक्षा प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन होना चाहिए

– आचार्य सोमदेव शास्त्री

वैदिक मिशन मुम्बई के तत्वावधान में तथा आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सहयोग से 23 से 25 मार्च, 2018 को आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई में आयोजित वेदों में शिक्षा का विज्ञान विषयक संगोष्ठी महत्त्वपूर्ण निर्णयों के साथ सम्पन्न हुई। संगोष्ठी में आर्य जगत् के वीतराग संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, युवा संन्यासी प्रखर वक्ता स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी आदि के अतिरिक्त श्री मिठाई लाल सिंह, श्री सुरेशचन्द्र आर्य, प्रो. विट्ठलराव आर्य, श्री अरूण अबरोल, श्री प्रकाश आर्य, श्रीमती कमला भाटीवाल, आचार्य धनन्जय कुमार पौंधा, आचार्य धर्मवीर–बदायूं, डॉ. रविन्द्र कुमार–हरिद्वार, ब्र. शिवदेव आर्य, आचार्य उदयन–पंजाब, डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा, आचार्या धारणा याज्ञिक, डॉ. पवित्रा, डॉ. सीमा, आचार्या शीतल, आचार्या आदेश, बहन प्रवेश आर्या, बहन पूनम आर्या, आचार्य कोमल कुमार, आचार्य मनुदेव, आचार्य भानु विद्यालंकार–इंदौर आदि संन्यासी, नेता, आचार्य एवं आचार्याओं ने भाग लिया। इस पूरे कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने की तथा इसका संयोजन आचार्य सोमदेव शास्त्री अध्यक्ष वैदिक मिशन मुम्बई ने बड़ी कुशलता के साथ किया।

23 मार्च को शहीदे आजम सरदार भगत सिंह के शहीदी दिवस पर विशेष कार्यक्रम आर्य पुरोहित सभा मुम्बई की ओर से किया गया जिसमें श्री नरेन्द्र शास्त्री मंत्री आर्य पुरोहित सभा ने मंच का संचालन किया तथा श्री नामदेव शास्त्री प्रधान आर्य पुरोहित सभा ने अध्यक्षता की। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, श्री कमल आर्य–दिल्ली, प्रो. विट्ठलराव आर्य आदि ने शहीदे आजम भगत सिंह के बलिदान को स्मरण करते हुए अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत

शेष पृष्ठ 5 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

'वायु एवं जल मनुष्य के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है'

—मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य का जीवन अन्न सहित वायु व जल पर आश्रित है। यदि मनुष्य को कुछ सेकेण्ड्स या मिनट तक वायु न मिले तो वह जीवित नहीं रह सकता। वायु का अन्न से भी अधिक महत्व है वह इसी बात से सिद्ध होता है। इसी प्रकार जल भी मनुष्य जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक है। हमारे शरीर का लगभग 60 प्रतिशत भाग जल होता है। हम स्वस्थ तभी रह सकते हैं जब हमें पर्याप्त मात्रा में शुद्ध जल प्राप्त हो। वर्तमान समय में देश के सभी स्थानों में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। भारत की जनसंख्या 125 करोड़ से अधिक है और छोटे छोटे शहरों में भी लाखों की संख्या में लोग रहते हैं। यह लोग मल मूत्र सहित नाना प्रकार से वायु और जल को प्रदूषित करते हैं। जल का आवश्यकता से अधिक मात्रा में उपयोग करते हैं, जिससे बहुत से लोगों को शुद्ध जल जिससे मनुष्य का स्वास्थ्य निरोग रहे, कठिनता से प्राप्त होता है। शुद्ध जल का मिलना आज कठिन ही है। इसी लिए कहा जाता है कि जल को उबाल कर उसके किटाणुओं को दूर कर उसका उपयोग करना चाहिये। इसी कारण आजकल सामर्थ्यवान घरों में जल स्वच्छ करने की वाटर प्योरिफायर या आरओ मशीने लगी हुई हैं। आज तो हमें किसी प्रकार से जल उपलब्ध हो भी रहा है परन्तु यह नहीं कह सकते की इसी प्रकार से इस शुद्धता का जल भविष्य में भी उपलब्ध होता रहेगा। हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों व सन्ततियों के विषय में सोचना है। उन्हें भी शुद्ध जल व अन्य पदार्थ उपलब्ध होते रहें इस पर ध्यान देना है। अतः जल की एक एक बूंद का उपयोग हमें विवेक पूर्वक करना चाहिये।

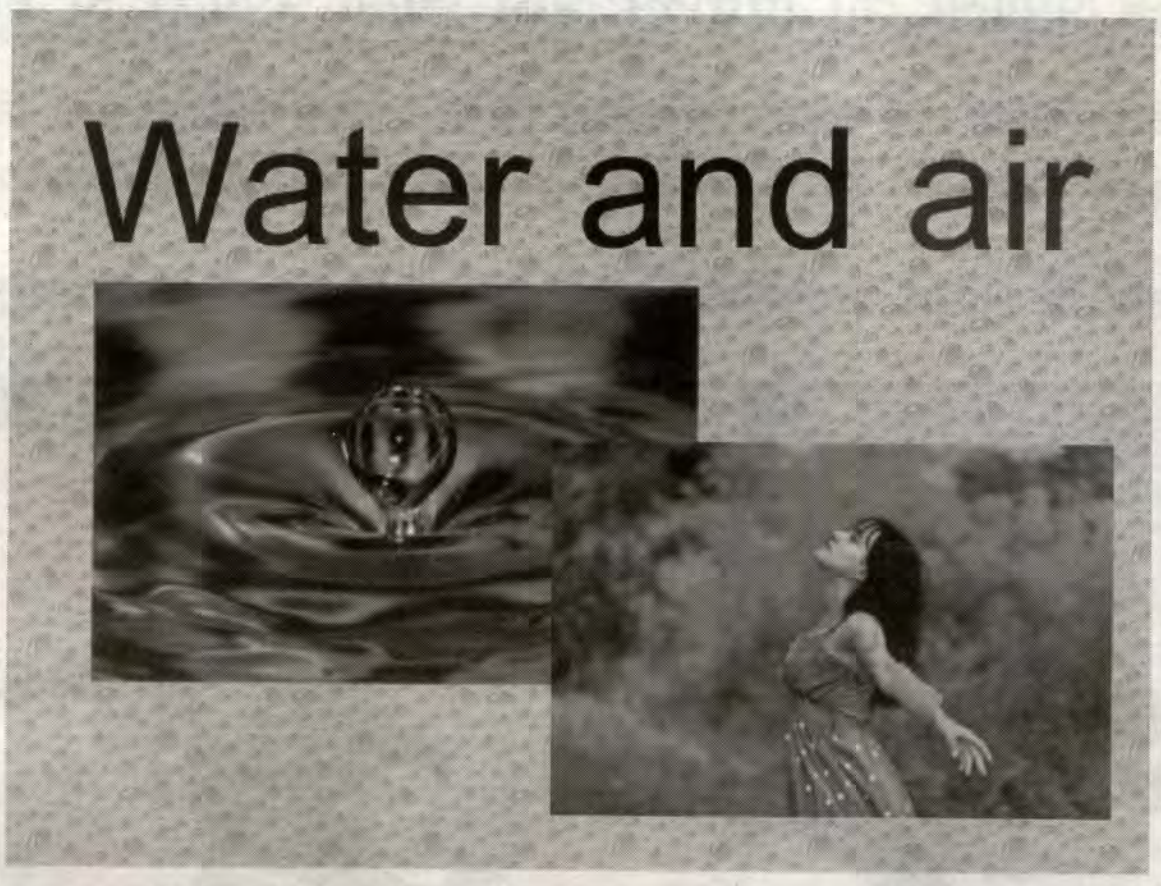

हमारे देश के नागरिकों का जल आदि पदार्थों का मितव्ययता के साथ उपयोग करने का कोई अच्छा उदाहरण या वर्तमान में परम्परा नहीं है। हमने अनेक लोगों को जल का दुरुपयोग करते हुए देखा है। ऐसे परिवार भी देखे हैं जहां जल का मीटर न लगा होने के कारण जल बहता रहता है, परन्तु घर के लोग जल की टोंटी को बन्द ही नहीं करते हैं। पीने के जल से लोगों को खेती करते हुए देखा है। आज कल वायु प्रदुषण के कारण जो वर्षा होती है वह जल भी स्वास्थ्य के हितकर न होकर हानिकारक ही होता है। कहते हैं कि वर्षा जल अम्लीय होता है। इसी प्रकार से गंगाजल भी इतना प्रदुषित है कि उसका आचमन करना स्वास्थ्य के हानिकारक हो सकता है, ऐसा विशेषज्ञ बता रहे हैं। इसी प्रकार किसान खेतों में जो कीटनाशक व कृत्रिम खाद डालते हैं उससे जल प्रदुषित होकर भूमिगत स्वच्छ जल भी दूषित वा प्रदूषित हो जाता है। उसका सेवन व पान करना भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। हमारी नदियां भी स्वच्छ नहीं है। जागरूकता के अभाव व अपनी आदतों के कारण लोग नदियों में कूड़ा कचरा व दूषित पदार्थ डालते रहते हैं, जिससे प्रायः सभी नदियों व नालों का जल प्रदुषित हो गया है। आजकल टीवी पर ऐसे गांव भी दिखायें जाते हैं जो निकटवर्ती नदियों का जल पीने के लिए मजबूर हैं और उस प्रदूषित जल से गांव के सभी लोग बीमार होकर कैंसर जैसे डरावने रोग का शिकार होकर असमय अल्पायु में मष्त्यु का ग्रास बन रहे हैं। ऐसे अनेक उदाहरण और भी हैं। ऐसी स्थिति में अनुमान लगाया जा सकता है कि जल व वायु प्रदूषण आदि के कारण भविष्य में मनुष्य का जीवन संकटों से भरा हुआ होगा। जल हमें शुद्धता के साथ सुलभ होता रहे इसके लिए हमें वायु शुद्धि, वृक्षारोपण व वनस्पतियों में वृद्धि व विस्तार की योजनायें क्रियान्वित करनी होंगी। अपने खेतों में कीटनाशकों व कृत्रिम खाद के विकल्प तलाशने होंगे। तभी यह सम्भव होगा की हम जल को स्वास्थ्य के अनुकूल रख पायेंगे।

वर्ष में एक बार हम विश्व जल दिवस भी मनाते हैं। जल के भावी संकट से बचने के लिए ही विश्व स्तर पर इस दिवस को मनाने का आयोजन किया गया है। लोगों में जल के प्रति जागरूकता व अपने कर्तव्यों का ज्ञान हो, यही इसका मुख्य प्रयोजन है। लोगों को कहा जा रहा है कि जल मूल्यवान है, इसकी एक बूंद भी व्यर्थ न करें। जल प्रदूषण के कार्यों से बचे। यह आवश्यक भी है। हम जब अपनी प्राचीन वैदिक संस्कृति पर विचार करते हैं तो हम पाते हैं कि हमारे पूर्वज शुद्ध वायु, जल व अन्न के महत्व को समझते थे और आजकल की तरह अनापशनाप प्रदूषण उत्पन्न करने वाले कार्यों को नहीं करते थे। आज का मनुष्य प्राचीन पूर्वजों की तुलना में कहीं अधिक प्रदूषण कर रहा है। उस पर भी वह अपने को अधिक शिक्षित मानता है। शिक्षा यदि मनुष्य के आचरण में नहीं आती तो वह शिक्षा किस काम की? जो शिक्षा आचरण में न आये, वह शिक्षा, शिक्षा नहीं कही जा सकती। शिक्षा वह है जो मनुष्य के अपने लिए व समाज के अन्य सभी लोगों के लिए हितकर कार्य करने की प्रेरणा दें। मनुष्य का जीवन एकांगी व्यतीत नहीं हो सकता। वह अपने जीवन में असंख्य मनुष्यों के पुरुषार्थ से लाभान्वित होता है, तभी वह जीवनयापन कर पाता है। हम अन्न व वनस्पतियां खाते हैं, दुग्धपान करते हैं, फलाहार करते हैं, जिसे देश भर के असंख्य किसानों ने उत्पन्न किया होता है। इसी प्रकार हम जो वस्त्र धारण करते हैं वह भी देश के बड़ी संख्या में श्रमिकों व इंजीनियरों आदि ने बनाया होता है, दर्जी उसे सिलते हैं, धोबी उन्हें धोते व प्रेस आदि से अपनी सेवा देते हैं। इसी प्रकार श्रमिक हमारा घर बनाते हैं, शिक्षक हमें पढ़ाते हैं, देश के लोगों के कर के रूप में दिए धन से हमें वेतन व आजीविका प्राप्त होती है, इसलिए विवेकशील मनुष्यों को केवल अपने हित साधने का विचार न कर देश व समाज के हितों की चिन्ता करनी चाहिये। आर्यसमाज का नवां व दसवां नियम भी हमें दूसरों की उन्नति में सहायक होने व सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहने को कहता है। आर्यसमाज का नवां नियम है 'प्रत्येक मनुष्य को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।' दसवां नियम है 'सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।' हमें मनुष्य जीवन व समाज के हितकारी इन नियमों का इनकी भावना के अनुरूप पालन व व्यवहार करना चाहिये। तभी हमारा समाज व देश उन्नति को प्राप्त हो सकेंगे। निजी स्वार्थ सिद्धि से हमारा नैतिक पतन होता है और देश कमजोर होता है।

जब तक पृथिवी पर शुद्ध वायु, जल व अन्न उपलब्ध हो रहा है तभी तक मनुष्य सुखी व स्वस्थ रहकर जीवन यापन कर सकता है। जब यह सन्तुलन नहीं रहेगा तो मनुष्य व प्राणी भी इस पृथिवी को अलविदा कर देंगे। ऐसी स्थिति न उत्पन्न हो, उसके लिए हमें भरसक प्रयत्न करना चाहिये। इसी में हमारा हित है। हमें जल के साथ अन्य सभी पदार्थों को प्रदूषण से मुक्त रखते हुए अपनी आवश्यकता को कम करके मिताहार को अपना आदर्श बनाना चाहिये। आज अन्तर्राष्ट्रीय जल दिवस पर हम निवेदन करना चाहते हैं कि सभी बन्धु जल सहित वायु, अन्न आदि में प्रदूषण न करके दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करें। जल का कम से कम उपयोग करें जिससे अन्यों को भी आवश्यकतानुसार जल उपलब्ध हो सके। हमारी आने वाली पीढ़ियां भी हमारी ही तरह सुख से अपना जीवन व्यतीत कर सकें, इस पर हमें विचार करना चाहिये। ओ३म् शम्।

— पता: 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001
फोन:09412985121

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से सभा कार्यालय ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें। -व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

वेद शक्ति

– अभिमन्यु कुमार खुल्लर

व्यापार के क्षेत्र में अमेरिका ने भी वेद के महत्त्व को स्वीकार कर लिया। विश्व में व्यापार के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रतिद्वन्दिता है। व्यापार का क्षेत्र कोई भी हो आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों से लेकर घरेलू उत्पाद तक। व्यापारिक बुद्धि में अमेरिकी अग्रगण्य हैं। व्यापार की किसी भी बाधा को लांघने में सर्वप्रथम। कहा जाता है कि राष्ट्रपति कैनेडी के शांति प्रयासों को शस्त्र निर्माण कम्पनियाँ बड़ी बाधा समझ रही थीं। इसलिए उन्हें राष्ट्रपति पद से ही नहीं जिन्दगी से ही हटा दिया गया। ली ओस्वाल्ड तो एक मोहरा भर था। राजनैतिक क्षेत्र में भी विश्वव्यापी उठा–पटक का मूलाधार व्यापारिक क्षेत्र में अग्रगण्यता बनाये रखना भी है। भले ही वैश्विक शक्तियाँ मानव कल्याण भावना का चोला कितना ही क्यों न ओढ़ें ''चाहे विश्व में शांति स्थापन की कितनी ही दुन्दभी क्यों न बजावें।'' प्रधानमंत्री मोदी जी ने अनेक कारणों से यथा रोजगार उपलब्धि, बौद्धिक शक्ति का विदेश पलायन रोकना, उद्योग धन्धे आदि का स्थापन आदि के कारण 'मेक इन इंडिया' का केवल नारा ही नहीं दिया बल्कि उसके प्रति गहरी प्रतिबद्धता भी दिखाई है। आयात की शर्तों में *सम्बन्धित वस्तु के भारत में निर्माण का* प्रावधान भी होगा। इस शर्त में टेक्नालॉजी ट्रांसफर भी सन्निहित है। 'मेक इन इंडिया' आह्वान का एक अप्रत्याशित परिणाम यह निकला कि अमेरिकी अन्तरिक्ष यात्री केन्द्र 'नासा' के 372 उत्कृष्ट वैज्ञानिक भारत लौट आये हैं। यह बहुत ही असाधारण बात है कि जो सुख–सुविधा उन्हें यू.एस.ए. में मिल रही थीं उसका 50 प्रतिशत मिलना भी यहाँ मुश्किल है और कार्य के वातावरण में भी जमीन–आसमान का अन्तर है।

प्रस्तुत संदर्भ में बाबा रामदेव के सकारात्मक पक्ष का उल्लेख भी अपेक्षित है। बाबा रामदेव मोदी जी के आह्वान को मूर्त रूप देने में लग गये हैं। उनके दन्तकांति टूथपेस्ट ने अमरीकी कम्पनी कोलगेट के टूथपेस्ट कारोबार में जबरदस्त घुसपैठ कर दी है। अमेरिकी कम्पनी ने उत्पाद कोलगेट सिबाका को वेद शक्ति युक्त कर बाजार में उतार दिया है। वेद शक्ति का विज्ञापन सुन्दर मुस्कराती हुई युवती, लौंग आदि पदार्थों के झरते हुए दानों से कर रही है। उधर दाढ़ीदार बाबा स्वयं ही विज्ञापन करते हैं। बड़ा अन्तर है लुभाने में। दूध व अन्य उत्पादनों के सफल व्यापार में बाबा रामदेव की कम्पनी को 10 हजार करोड़ से भी अधिक राशि का मालिक बना दिया। अन्य उदाहरण टाटा का है जो देश का नमक बेचकर अरबपति हो गया है। आप भी कोई चीज ले आइये, छोटी–बड़ी क्वालिटी उत्पादन कीजिए। आप भी कोई न कोई पति लाख, करोड़ या अरब हो सकते हैं। उत्पादन के लिए बहुत चीजें दिख रही हैं। एक चीज मैं आपको बता देता हूँ। घर के किचन में कैंची मिली वह टिटेनियम की बनी है जिसकी धार नहीं टूटती, जंग नहीं लगती, कभी धार नहीं करानी पड़ती टिटेनियम स्टील से अधिक मजबूत व हल्का होता है। वेद शक्ति की धार 140 वर्ष पूर्व विश्वबंद्य, विश्वरत्न, महर्षि जमा चुका थे। अमेरिका से कर्नल स्कॉट एवं मैडम ब्लेवेटस्की उनकी यश गाथा सुनकर उनसे मिलने आये थे। महर्षि का सहयोग उन्हें चमत्कार आधारित मत के लिए करना था। इसलिए उनका महर्षि से विरोध होना स्वाभाविक था। महर्षि ने इन लोगों से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। प्रो. मैक्समूलर मैकाले के प्रभाव में आकर सांयण और महीधर के भाष्यानुसार ही वेदों की व्याख्या कर उन्हें निकृष्टतम् सिद्ध करने में लगे थे। कालान्तर में जब उन्होंने महर्षि का भाष्य देखा तो वेद शक्ति समझ में आई और अनेक लेखों में भूल–सुधार भी महर्षि के प्रशंसकों में अमेरिकी एन्ड्रयू जैक्सन व इंग्लैण्ड के प्रो. मोनियर विलियम्स थे। प्रो. विलियम्स ने तो स्वयं के व्यय से महर्षि दयानन्द के इंग्लैण्ड में प्रवचन कराने के लिए उनका समस्त व्यय भार वहन करने का प्रस्ताव भी रखा था। वैज्ञानिक डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने जिन्होंने चारों वेदों का अंग्रेजी में भाषान्तर किया था। अमेरिका, अफ्रीका तथा यूरोप के देशों में वेद शक्ति की धार जमा दी थी। अनेक आर्य विद्वान् जिनमें अजमेर के स्व. धर्मवीर जी एवं आदरणीय वेद प्रकाश श्रोत्रिय प्रभृति लोग हैं और अन्य अनेक संन्यासीगण हैं जो विदेशों में वेदों का डंका बजा रहे हैं। उनका विरूदगान नहीं होता। वांछित सम्मान और प्रचार नहीं मिलता, शोर सुनाई देता है संगठन की कमजोरी का।

भारत में वेद शक्ति के प्रचार की महती आवश्यकता है। लेकिन समस्त पौराणिक विद्वान्, मठाधीश, जगतगुरू शंकराचार्य, विभिन्न अखाड़ों के संत, महंत सभी ने आर्य समाजियों (वैदिक धर्मियों) के मत्थे यह कार्य मढ़ दिया। तुम्हारे ही संस्थापक वेदोद्धारक दयानन्द ने यह फसाद पैदा किया है। तुम ही भुगतो। हम तो उनके जमाने में जैसे थे वैसे ही रहेंगे। हलुवे, मावड़े, पद–प्रक्षालन, चढ़ावे में लाखों की आय छोड़कर अवधूत दयानन्द की राह पर न तब चले थे और न अब चलेंगे ये हमारी भीष्म प्रतिज्ञा है। अब तो हमसे भी आगे निकलने वाले अनेक बाबा पैदा हो गये हैं जो कचौड़ी, समोसे, जलेबी, बांटकर लाखों चीर रहे हैं। भभूत बांटने वाले बाबा भी हो गये हैं। हिन्दू भक्तों को परवाह ही नहीं कि भभूत बांटने वाला, चमत्कार दिखाने वाला बाबा हिन्दू है या मुसलमान। दरगाहें अभी भी हिन्दू भक्तों से भरी पड़ी हैं। इस 21वीं सदी में भी चमत्कारों में विश्वास सर्वाधिक शिक्षित, अशिक्षित, धनाढ्य, निर्धन सभी वर्गों में गहराई तक जड़ जमाये हुए हैं। अपने एक लेख 'प्रभु से मांगना सीखिये' में यह प्रसंग लिख चुका हूँ। विषयानुकूल प्रतीत होने पर पुनरावृत्ति उचित जान पड़ती है। जालन्धर के एक गुरुद्वारे में विदेश यात्रा के इच्छुक भक्तों को 100 रुपये लेकर 500 का वायुयान चढ़ावे में देने पर गुरूग्रन्थ साहब अवश्य मनोकामना पूरी करेंगे का आश्वासन दिया जा रहा है। (संदर्भ ऋषि तर्पण पृष्ठ–40) अब सुपुत्री मनीषा कपूर के हैदराबाद में बस जाने पर पता चला है कि वहाँ एक बीजा हनुमान मंदिर है। बीजा के प्रार्थना पत्र की फोटो प्रति रखकर मनोकामना पूरी करने की प्रार्थना कीजिए चिरकुट बालाजी के नाम से विख्यात मंदिर के पुजारी धारा प्रवाह अंग्रेजी में घोषणाएँ करते रहते हैं। बीजा मिलने पर मंदिर की 108 परिक्रमा कीजिए चढ़ावा तो स्वेच्छा से भरपूर चढ़ायेंगे ही। एक अन्य उदाहरण है होशंगाबाद मध्य प्रेदश में लेटरबाक्स में से पानी का प्रवाह फूट निकला। चमत्कार की चर्चा सम्पूर्ण नगर में फैल गई। लेटरबाक्स की विधिवत पूजा अर्चना चालू हो गई। बाद में पता चला कि लेटरबाक्स के नीचे से जाने वाली पाइपलाईन फट गई थी। उपर्युक्त उदाहरणों में अकाट्य अन्तिम सीमा तक आस्था रखने वाले हिन्दुओं की संख्या उनकी ईश्वर की अवधारणा उस ईश्वर के आश्रय स्थल, उस ईश्वर के प्रचार–प्रसार में संलग्न जन आदि के बारे में जानना बहुत आवश्यक है। सन् 2016 की जनसंख्या गणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 1 अरब, 32 करोड़, 40 लाख है। मुसलमान, ईसाई, सिख, जैन, बौध आदि शामिल किये जाने पर 100 करोड़ हिन्दू जनसंख्या है। इस जनसंख्या में भी वैदिकधर्मी सहित पौराणिक हिन्दुओं में श्रेष्ठ हिन्दुओं की संख्या 10 करोड़ मानकर भी 90 करोड़ हिन्दू शेष रहते हैं जिनकी आस्था के केन्द्र मंदिर, साधु, संत, पीर, फकीर व अन्य चमत्कारी बाबा–बाबी हैं। राधे माँ हैं।

वैदिक धर्मी संन्यासियों, विद्वानों एवं युद्धग्रस्थ संगठन के शीर्ष नेताओं सहित सामान्यजन को स्मरण दिलाना चाहता हूँ कि हमारे सामने महर्षि दयानन्द का पुनीत कार्य है कि वेदों का डंका आलम में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने। महर्षि तो वेद का डंका बजाकर ब्रह्मानन्द में लीन हो गये हैं। मोक्ष से पुनरावृत्ति करोड़ों वर्ष बाद की है। इसलिए वेदों का डंका बजाने का कार्य आर्य समाज संगठन पर है। महर्षि आश्वस्थ थे कि उनके देहावसान के बाद यह संगठन उनके द्वारा रोपित वृक्ष उनके कार्य को आगे बढ़ायेगा। लेकिन 125 वर्ष में ही वृक्ष में घुन लग गया है। ऐसी स्थिति में महर्षि का वेद शक्ति के प्रचार–प्रसार का कार्य कितना दुःख साध्य कठिन एवं बाधाओं से ग्रस्त है। आंकलन करना आवश्यक है। जरा देखिये तो जिन 90 करोड़ हिन्दुओं में प्रचार करना है उनकी एकान्तिक निष्ठा का केन्द्र मंदिर है। जिनकी आय का विवरण भी चौंकाने वाला होगा।

1. तिरुपति बाला जी, समस्त स्रोतों से आय 6 करोड़ 35 लाख रुपये प्रतिदिन है।
2. वैष्णो देवी– 500 करोड़ प्रतिवर्ष।
3. सिरडी साईं बाबा नासिक – 350 से 450 करोड़ प्रतिवर्ष।
4. सबरी माला, केरल – 230 करोड़ वार्षिक।
5. जगन्नाथपुरी – 150 करोड़ वार्षिक।
6. सिद्धि विनायक मुम्बई – 40 करोड़ वार्षिक।
7. सत्य साईं बाबा बंगलौर – 40 हजार करोड़ के स्वामी थे।

यह तो गिने–चुने मंदिरों के बारे में जानकारी दी है। देश में लाखों मंदिर हैं जिनकी आय के बारे में अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। संदर्भित मंदिरों में भक्तगणों को ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना का समय ही नहीं मिल पाता। दिनों, घण्टों, पंक्ति में खड़े होने पर जब नम्बर आता है तो 10–5 सेकेण्ड में ही धकिया दिये जाते हैं। दर्शन हो गये यही पर्याप्त है। बाकी सबकुछ भगवान देख लेंगे। भक्त भी क्षण मात्र के दर्शन से पूर्णतया संतुष्ट भगवान भरोसे छोड़कर निश्चिन्त! इस अकूत आय के स्रोत आम धार्मिक भीरूजन हिन्दू नहीं हो सकते। यह आय तो भ्रष्टतम व्यापारी वर्ग, राजनीतिक नेता और शासकीय कर्मचारियों के दान की ही होनी चाहिए। आइये! देखें क्यों ये लोग इतना अधिक दान–पुण्य करते हैं। इनकी आय के स्रोत क्या हैं – व्यापारी वर्ग जो अकूत लाभ के लिए समस्त उपाय यथा कर–वंचन, डूप्लीकेट लेखा रखकर कम लाभ बताना, बिना बिल बनाये व्यापार करना, संसाधनों की कमी बताकर कई गुना दामों की वृद्धि काले धन को सफेद धन में बदलने वाले लोग आदि–आदि – शासकीय सेवाओं में कार्यरत कर्मचारी गण जिनमें सर्वोच्च पदों से लेकर निम्नतम श्रेणी के कर्मचारी आते हैं। ये लोग पूरी तन्मयता, संलग्नता से अपने दायित्व का निर्वहन नहीं करते। वेतन भत्ते चाहे कितने ही अधिक क्यों न हों, संतुष्ट न होकर सरकारी कार्य करने के लिए घूस लेते हैं, जमकर लेते हैं। इसके अतिरिक्त भी कई तरह के हथकंडे अपनाकर धन अर्जित करते हैं – शिक्षा व चिकित्सा व्यवसाय में अनैतिक रूप से धन की लूट करने वाले लोग। इस तरह की आय करने वालों की सूची पर कहीं विराम लगता दिखाई नहीं देता। जीवन का कोई भी क्षेत्र इनसे छूटा नहीं है। तभी तो ये लोग 70–80 करोड़ का आंकड़ा बनते हैं। ये अशान्तचित्त मनोवृत्ति के लोग हैं। जो ऐसा ईश्वर चाहते हैं जो देखे सुने सब, बोले नहीं और उनकी मनोकामना पूरी करे और कृत पापों से मुक्ति दिला दे। इसीलिए घास–फूस, मिट्टी–पत्थर तथा धातु से निर्मित भगवानों की प्राण प्रतिष्ठा हो जाने पर जागृत देवता मानकर पूजा करते हैं। विष्णु भगवान है तो ग्वालियर का बिड़ला मंदिर, दिल्ली का बिड़ला मंदिर, हैदराबाद के बिड़ला मंदिरों में विष्णु की ही मूर्ति है। प्रत्येक स्थान की मूर्ति का विष्णु एक ही स्वभाव, गुण, कर्म सम्पन्न होना चाहिए। जितना तिरुपति बाला जी का विष्णु मंदिर, फिर भी ग्वालियर, दिल्ली व हैदराबाद का हिन्दू तिरुपति बाला जी क्यों जाता है। क्या वह अधिक प्रभावकारी शक्तिशाली है। या भक्तों की आत्मा ही उन्हें यहाँ से वहाँ भटका रही है और इस सब व्यवस्था को बनाये रखने के लिए संन्यासियों, विद्वानों, साधु–सन्त, मठाधीशों का पर्याप्त जन–बल भी है। चारों मठों के जगत्गुरु शंकराचार्य भी हैं। ऐसे ही एक महान विभूति हैं निवर्तमान जगत्गुरु शंकराचार्य, लम्बी गौर वर्ण काया, उज्ज्वल, समुन्नत भाल पर त्रिपुण्ड का तिलक अत्यन्त सम्मोहक, सुमधुर वाणी, सरल शुद्ध हिन्दी के उद्बोधन, ग्वालियर में अनेक बार उनके प्रवचन हुए। सभी प्रवचनों में प्रबल उत्सुकता से सपत्नीक गया। डी.ए.वी. कॉलेज कानपुर से पोस्ट ग्रेजुएट स्वामी जी महाराज महर्षि दयानन्द के मार्ग पर न चलकर सन्त शिरोमणि तुलसीदास जी के मार्ग पर क्यों चले। आश्चर्य तब भी था और आज भी है। इतनी महान विभूति को किसी ऐषणा से बांधने की मेरी औकात नहीं है। यह तो बात हुई 80–90 करोड़ हिन्दुओं की जो मूर्ति पूजा के मकड़जाल में फंसे हुए हैं और खुद भी इस जंजाल से निकलना नहीं चाहते। उन्हें महर्षि दयानन्द द्वारा वेदोक्त ईश्वर किसी भी हालत में स्वीकार नहीं होगा, क्योंकि वह निराकार है। उसकी पीठ पीछे या उसे तात्कालिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए पत्थर मानकर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। वह सर्वव्यापक भी है, इन दोनों गुणों से वह सब कुकर्मों को स्वयं जानता है। वह क्षमाशील, माफ करने वाला भी नहीं है। क्योंकि वह न्यायकारी है। जज है। सब कर्मों, कुकर्मों का न्यायोचित फल देता है। फांसी की सजा पाने योग्य कार्य करने वाले को आजीवन कारावास नहीं देगा और न उसे पूर्णतया फांसी की सजा से मुक्त करेगा। क्या फायदे ऐसे ईश्वर से? हमें तो तिरुपति बाला जी, वैष्णो देवी, साईं बाबा ही ठीक हैं।

अब जरा 32 करोड़ का भी हिसाब देखिए। लगभग 20 करोड़ मुसलमान (वर्तमान पाकिस्तान की कुल आबादी तथा महर्षि दयानन्द के समय कुल भारत की आबादी के बराबर) बौद्ध, ईसाई, सिख और जैन मतावलम्बी हैं। इनमें से कितने लोग महर्षि दयानन्द के वेदोक्त ईश्वर को मानेंगे सोचा भी नहीं जा सकता। इस प्रस्तुति के पश्चात् मैं आर्य संन्यासियों, विद्वानों, संगठन के कर्णधारों से नम्रतापूर्वक निवेदन करना चाहूँगा कि वे परिस्थिति का आंकलन करें व कार्यक्रम सुनिश्चित बनावें जिससे वैदिक धर्म को महर्षि दयानन्द के निर्देशों के सम्बन्ध में कृण्वन्तों विश्वमार्यम् को सार्थक बनाने के लिए क्या किया जाना चाहिए। मेरा निवेदन है कि सभी मतभेदों को मनभेदों को बुलाकर सबसे पहले संगठन मजबूत किया जाये। मुम्बई प्रतिनिधि सभा के आदरणीय महामंत्री श्री अरूण कुमार अबरोल जी ने दूरभाष पर बताया कि फरवरी, 2017 के हैदराबाद सम्मेलन में उठाये गये प्रयास सार्थक रूप में बढ़ रहे हैं। आर्य जगत् के लिए यह अत्यन्त शुभ समाचार है। संन्यासियों, विद्वानों का संगठन वेद शक्ति के रूप में उभरेगा। आर्थिक पक्ष भी मजबूत होगा। आर्थिक रूप से सहयोग करने वालों का उत्साहवर्द्धन होगा। सभी तरह कल्याण होने की सुगन्ध मैं अनुभव कर रहा हूँ। इत्योम।

– सेवा निवृत्त वरिष्ठ लेखाधिकारी (केन्द्र)
22, नगर निगम क्वाटर्स जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
मो.:– 94588 – 4094 (यू.एस.ए.)
ई–मेल :–khullar2010@gmail.com

आर्य समाज खुब्बनपुर, जिला–हरिद्वार के हीरक जयन्ती समारोह में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्घाटन भाषण

आर्य समाज खुब्बनपुर की स्थापना के 75वें वर्ष के अवसर पर भव्य हीरक जयन्ती समारोह का आयोजन गत् 22 से 24 मार्च, 2018 को विशाल स्तर पर आयोजित किया गया जिसका उद्घाटन सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया। 22 मार्च को दोपहर 2 बजे अत्यन्त उत्साह के वातावरण में समारोह का उद्घाटन सत्र प्रारम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता मा. यशवीर सिंह आर्य ने की। इस अवसर पर आर्य समाज के भीष्म पितामह की उपाधि से विख्यात वयोवृद्ध विद्वान, लेखक एवं संघर्ष की प्रतिमूर्ति मा. सुमन्त सिंह आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के कार्यकारी प्रधान मा. मानपाल सिंह राठी। आर्य संन्यासी स्वामी यज्ञमुनि, जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री हाकम सिंह आर्यवंशी, श्री जगपाल सिंह आर्य, श्री कृष्णदेव वानप्रस्थ, श्री राजमुनि जी, वैद्य गीताराम जी, श्री अरूण कुमार, श्री तेलूराम आर्य आदि भी मंच पर उपस्थित थे। मंच का संचालन आर्य समाज के मंत्री श्री यशपाल आर्य ने किया।

समारोह का विधिवत उद्घाटन करते हुए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज के छठें नियम की व्याख्या करके आर्य समाज को आम जनता का हितैषी बताया। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के दस नियमों में छठवां नियम इसके मुख्य उद्देश्य को स्पष्ट करने वाला बनाया था। छठे नियम में कहा गया है कि 'संसार का उपकार करना ही इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।' अर्थात् शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना। इससे स्पष्ट हो जाता है कि आर्य समाज किसी आर्य समाजी, किसी हिन्दू या किसी भारतीय का उपकार करने मात्र के लिए नहीं बनाया था, बल्कि अफ्रीका के घने जंगलों, अरब के रेगिस्तानों, अमेरिका की चमचमाती महानगरियों या जहाँ भी आदमी का अस्तित्व है उसका उपकार करना इसका मुख्य उद्देश्य निर्धारित किया था। महर्षि दयानन्द ने उपकार के कार्य में कोई दीवार नहीं रखी। बल्कि पूरे संसार का उपकार करने का दायित्व आर्य समाज को सौंपा था। इसी नियम में संसार के उपकार शब्द की व्याख्या करते हुए लिख दिया था कि शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। उन्नति का यह क्रम भी अपने आपमें बहुत महत्त्वपूर्ण है। जीवात्मा अमर है, किन्तु मनुष्य का मनुष्य होना उसके शरीर पर अवलम्बित है। स्वामी जी ने कहा कि शरीर की उन्नति के बिना, उसके रख–रखाव के बिना, उसकी अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा किये बिना मनुष्य का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है। अतः शारीरिक उन्नति को महर्षि ने प्राथमिकता दी। महर्षि ने दूसरा कार्यक्रम आत्मिक उन्नति करना बताया। शरीर संसार के उपकार का एक साधन मात्र है और उसकी उन्नति सिर्फ एक साधन को मजबूत करना और ठीक रखना ही है। किन्तु शरीर के साथ–साथ उसकी जीवात्मा की पवित्रता एवं उन्नति भी जरूरी है। आत्मिक उन्नति के लिए सत्य के प्रति मनुष्य का आग्रह परमात्मा के प्रति उसकी आस्था और मानव मात्र के प्रति [illegible]भाव अत्यावश्यक है। आत्मिक उन्नति के कार्यक्रम [illegible] महर्षि दयानन्द ने अप[illegible] विभिन्न पुस्तकों आदि में विस्तृत व्याख्या की है। इसी प्रकार जब मनुष्य शारीरिक और आत्मिक रूप से स्वस्थ और उन्नत होगा तो सामाजिक उन्नति के लिए भी उसका क्रियाशील रहना आवश्यक है। क्योंकि शारीरिक या आत्मिक रूप से शक्तिशाली व्यक्ति अपनी सामाजिक उपादेयता के बिना निकम्मा और समाज पर बोझ ही रहेगा। इसलिए उसे सामाजिक विकास के काम में पूरी भागीदारी करनी पड़ेगी।

अज्येष्ठासो, अकनिष्ठासो एते सम् भ्रात्रो ववृधुः सौभगाय।
युवा पिता स्वपा रूद्र एषाम्, सुदुघा प्रश्निः सुदिना मरूद्भय।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेद के इस मन्त्र के आधार पर समाज व्यवस्था का एक सपना देखा था। इस मन्त्र के अनुसार कोई बड़ा नहीं होगा, कोई छोटा नहीं होगा, सब भाई की तरह होंगे। जिनका पिता परमात्मा और माता पृथ्वी होगी। महामानव महर्षि दयानन्द के बलिदान को 135 वर्ष पूरे हो रहे हैं। एक महान संन्यासी ने न केवल इस देश की सड़ी–गली समाज व्यवस्था के विरुद्ध बगावत की एक आंधी खड़ी कर दी थी बल्कि सारी दुनिया के विचारशील लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया था कि आर्य समाज के नाम पर भारत में एक आग सुलग रही है। यही वजह थी कि अमेरिका में बैठे प्रसिद्ध दार्शनिक एन्ड्रयू जैक्सन ने कहा था कि मुझे पूरब की दिशा में एक आग दिखाई पड़ती है जो दयानन्द के दिल में सुलग रही है और आर्य समाज की भट्टी में धधक रही है। अग्निना अग्निः समिध्यते। अग्नि से अग्नि प्रज्ज्वलित होती है। महर्षि दयानन्द के हृदय में सुलगी आग के साथ भी यही हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द, शहीद लेखराम, लाला लाजपत राय, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, शहीदे आजम भगत सिंह, श्याम जी कृष्ण वर्मा जैसी असंख्य जवानियाँ जलती हुई मशालें बन उठीं और आज इस पवित्र ऋषि वेदी पर हमें यह कहते हुए गर्व है कि बलिदान, वीरता, संकल्पशीलता, परिश्रम, लगन एवं त्याग की आर्य परम्परा का गौरवशाली इतिहास हमारे पीछे है। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द के द्वारा दिये गये इस कार्यक्रम को लेकर ही हमें आज दुनियाभर की समस्याओं के विरुद्ध एक व्यापक आन्दोलन आगामी वर्षों में खड़ा करना होगा। हमें आर्य समाज को जनसामान्य का दुःख, दर्द का साथी एवं सहयोगी बनाना होगा। हमें वसुधैव कुटुम्बकम् की उदात्त भावना को चरित्रार्थ करते हुए मानव मात्र के कल्याण के लिए अपनी कार्य योजना तैयार करनी होगी।

स्वामी जी ने आह्वान करते हुए कहा कि समाज के किसी भी वर्ग के ऊपर आने वाले संकट एवं समस्याओं को हल करने के लिए सर्वात्मना समर्पित होकर कार्य करना होगा। स्वतन्त्रता आन्दोलन की भांति वर्तमान व्यवस्था के विरुद्ध एक क्रांतिकारी कार्यक्रम लेकर यदि आर्य समाज ने कार्य करना शुरू कर दिया तो बहुत शीघ्र आर्य समाज जन–जन के हृदयों पर अपने प्रभाव की छाप छोड़ने में अवश्य ही सफल होगा। समाज के ज्वलन्त मुद्दे, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, धार्मिक पाखण्ड, महिला उत्पीड़न एवं शोषण सार्वदेशिक सभा के कार्यक्रम के एजेण्डे पर मुख्य रूप से रखे गये हैं और इन मुद्दों पर सभा निरन्तर कार्य भी कर रही है। स्वामी जी ने आर्यों को प्रेरित किया कि अब आर्य समाज के भवनों से बाहर आकर आम जनता के बीच कार्य करने की जरूरत है। इसके लिए आवश्यक है कि जिन लोगों ने अपने गृहस्थ आश्रम की जिम्मेदारियाँ पूरी कर ली हों वे वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर समाज सेवा में कूद पड़ें और जो नौजवान अपना जीवन महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने के लिए लगाने के इच्छुक हों वे जीवनदानी बनकर कार्य करने के लिए आगे आयें।

स्वामी जी ने कहा कि आज महर्षि दयानन्द एवं समस्त बलिदानी महापुरुषों से प्रेरणा लेकर कार्य करने की जरूरत है। जो भी अपना समय देना चाहते हों वे हमसे सम्पर्क करें। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज खुब्बनपुर के सभी पदाधिकारियों एवं उपस्थित आर्यजनों को आर्य समाज के 75वें स्थापना दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं व साधुवाद प्रदान किया। इस कार्यक्रम में आर्य समाज के युवा भजनोपदेशक श्री विनोद दधीचि, श्री भीष्म कुमार एवं आर्य वीरांगना संगीता आर्या के भजनो की प्रस्तुति भी लोगों को मन्त्रमुग्ध कर देने वाली रही।

राम नवमी के अवसर पर आर्य समाज के दिग्गज विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी श्री पं. रामचन्द्र जी देहलवी का जन्मदिवस

आर्य समाज सदर बाजार में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

दिनांक 25 मार्च, 2018 को रामनवमी के दिन आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र जी देहलवी का जन्मदिवस आर्य समाज सदर बाजार में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विशेष यज्ञ तथा तदोपरान्त सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध समाजसेवी तथा सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान वैद्य इन्द्रदेव जी, सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री मधुर प्रकाश जी के अतिरिक्त भारी संख्या में गणमान्य लोग उपस्थित थे। वक्ताओं ने पं. देहलवी जी के संस्मरणों को साझा करते हुए उनकी विद्वता का बखान किया। ज्ञातव्य हो कि राम नवमी के दिन ही पं. रामचन्द्र जी देहलवी का जन्म हुआ था। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

पृष्ठ–1 का शेष

वैदिक मिशन मुम्बई के तत्वावधान एवं आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सहयोग से आयोजित वेदों में शिक्षा विज्ञान विषयक संगोष्ठी महत्त्वपूर्ण निर्णयों के साथ हुई सम्पन्न

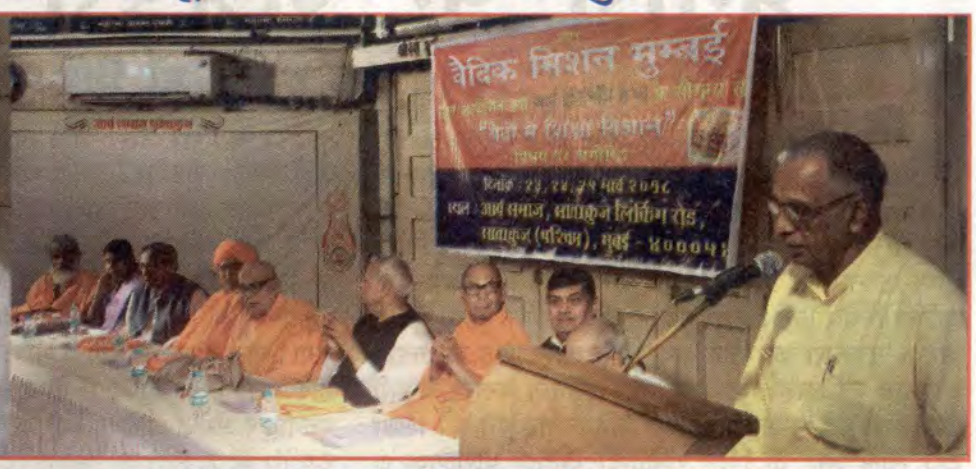

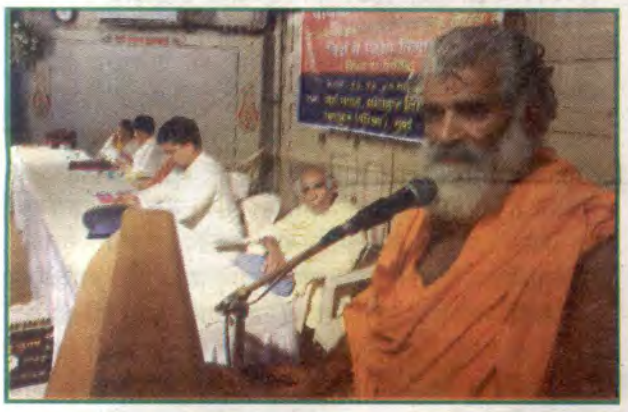

किये। श्री सतीश सुमन की भजन पार्टी द्वारा क्रांतिकारी भजनों की प्रस्तुति भी प्रभावशाली रही। शहीद सम्मेलन से पूर्व बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आचार्य सोमदेव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ किया गया तथा उपस्थित संन्यासियों एवं विद्वत्वर्ग ने बहन जी को शुभकामनाएँ, आशीर्वाद तथा साधुवाद प्रदान किया और उनके दीर्घायुष्य, उत्तम स्वास्थ्य तथा उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विदुषी सुदक्षिणा शास्त्री ने शॉल एवं मोतियों की माला द्वारा बहन पूनम जी का स्वागत कर आशीर्वाद दिया। बहन जी का जन्मदिन मनाने के लिए उनके साथ बहन प्रवेश आर्या, शशि आर्या, रीमा आर्या, इंदू आर्या,

सुमन आर्या आदि भी बम्बई आई हुई थीं। इन्होंने भी बहन जी को ढेर सारी बधाई देकर उनका सम्मान किया।

24 मार्च को प्रातः यज्ञ के उपरान्त उद्घाटन समारोह 9.30 बजे से 11 बजे तक स्वामी प्रणवानन्द जी की अध्यक्षता में चला। प्रारम्भ में सभी सम्मानित अतिथियों का स्वागत किया गया। आर्य पुरोहित सभा मुम्बई के विद्वानों ने ईश प्रार्थना की तथा वैदिक मिशन के अध्यक्ष डॉ. सोमदेव शास्त्री ने स्वागत भाषण प्रस्तुत कर सभी का सम्मान किया। उद्घाटन भाषण में सर्वश्री मिठाई लाल सिंह जी ने अपने उद्बोधन में सभी गुरुकुलों के आचार्यों एवं आचार्याओं और वैदिक विद्वानों से आग्रह किया कि आप सब प्रयत्नशील होकर गुरुकुलों के द्वारा वैदिक धर्म के विद्वान्, उपदेशक एवं प्रचारक तैयार करने में प्राण–पण से लगें। उन्होंने कहा कि विद्वान् गुरुकुलों से ही तैयार होंगे। इस अवसर पर श्री सुरेशचन्द्र आर्य, प्रो. विट्ठलराव आर्य, श्री अरूण अबरोल, श्री प्रकाश आर्य, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, श्री कमला भाटीवाल, स्वामी आर्यवेश जी तथा स्वामी धर्मानन्द जी ने भी अपने संक्षिप्त विचार प्रस्तुत किये। स्वामी प्रणवानन्द जी ने अपना अध्यक्षीय उद्बोधन देकर संगोष्ठी का उद्घाटन किया।

संगोष्ठी का कार्यक्रम अलग–अलग सत्रों के माध्यम से चलाया गया जिसमें आमंत्रित विद्वानों ने अपने विचार वेदों में शिक्षा विज्ञान विषय पर प्रस्तुत किये। विभिन्न सत्रों का संयोजन डॉ. रविन्द्र कुमार, आचार्य धनन्जय कुमार, श्री संदीप आर्य, स्वामी श्रद्धानन्द आदि विद्वानों ने किया। संगोष्ठी में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि आगामी 6 से 8 जुलाई, 2018 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन में देश–विदेश के सभी गुरुकुल पूरे उत्साह के साथ भाग लेंगे। गुरुकुल महासम्मेलन में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली अर्थात् आर्ष शिक्षा प्रणाली को वर्तमान शिक्षा प्रणाली के विकल्प के रूप में प्रस्तुत कर केन्द्र सरकार से माँग की जायेगी कि केन्द्र में एक वैदिक शिक्षा बोर्ड गठित किया जाये जिसके अन्तर्गत आर्ष शिक्षा के केन्द्रों विशेषकर गुरुकुलों को पूर्ण मान्यता तथा विशेष आर्थिक पैकेज देकर सशक्त बनाया जाये। संगोष्ठी में अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूत्र को वर्तमान समय में नई पीढ़ी के बच्चों के लिए अत्यन्त उपयोगी बताते हुए विद्वानों ने अपने प्रभावशाली विचार प्रस्तुत किये। वैदिक मिशन मुम्बई के मंत्री श्री संदीप आर्य ने मिशन की गतिविधियों का विवरण एवं लेखा–जोखा पढ़कर सुनाया जिसे करतल ध्वनि के साथ पास किया गया।

इस संगोष्ठी की सम्पूर्ण व्यवस्था में आर्य समाज सान्ताक्रुज, आर्य पुरोहित सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के पदाधिकारियों एवं सक्रिय सदस्यों ने बढ़–चढ़कर योगदान दिया। इनमें मुख्य रूप से श्री मिठाई लाल सिंह जी, श्री अरूण अबरोल जी, श्री संदीप आर्य जी, श्री रमेश आर्य जी, श्री भूपेन्द्र शास्त्री जी आदि का नाम उल्लेखनीय है। इनके अतिरिक्त भोजन एवं आवास की व्यवस्था में सर्वश्री विजय गौतम मंत्री आर्य समाज काकड़वाड़ी, श्री प्रणव शास्त्री एवं श्री अनिरूद्ध शास्त्री आदि ने अथक परिश्रम करके समुचित व्यवस्था की।

संगोष्ठी के समापन सत्र में युवा विद्वान् तथा प्रखर वक्ता डॉ. सोमदेव शास्त्री जी के सुयोग्य सुपुत्र श्री प्रणव शास्त्री का अंग्रेजी भाषा में प्रभावशाली व्याख्यान हुआ जिसे उपस्थित श्रोताओं ने बड़ी गम्भीरता से दत्तचित्त होकर सुना। श्री प्रणव शास्त्री की वक्तृत्त्वकला निःसंदेह अद्भुत एवं प्रभावशाली है और उनकी अंग्रेजी भाषा पर

विशेष पकड़ है। इसी सत्र में डॉ. सोमदेव शास्त्री द्वारा लिखित भागवत दर्पण के दूसरे संस्करण का विमोचन भी सर्वश्री प्रणवानन्द सरस्वती जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी आदि द्वारा किया गया। वैदिक मिशन मुम्बई की ओर से सभी विद्वानों एवं विदुषियों को शॉल, प्रमाण पत्र तथा दक्षिणा द्वारा सम्मानित करते हुए मिशन की ओर से डॉ. सोमदेव शास्त्री जी तथा मंत्री श्री संदीप आर्य जी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। वहीं आर्य समाज सान्ताक्रुज के मंत्री श्री रमेश आर्य ने इस सफल कार्यक्रम के लिए सभी आगन्तुक महानुभावों का आभार जताया। इस संगोष्ठी में मुम्बई की विभिन्न आर्य समाजों के सदस्य श्रोता के रूप में उत्साह के साथ सम्मिलित हुए। कार्यक्रम पूरी सफलता के साथ 25 मार्च, 2018 को 3 बजे सम्पन्न हुआ।

6 मार्च जन्म दिवस पर विशेष

क्रांति के अग्रदूत – स्वामी भीष्म

– डॉ. शिव कुमार शास्त्री

विचार–विचक्षण पाठकवृन्द आज से लगभग 160 वर्ष पूर्व चैत्र कृष्ण पंचमी सम्वत् 1915 रविवार सन् 1859 के दिन तेवड़ा (कुरुक्षेत्र) हरियाणा नामक छोटे से गांव में लाल सिंह नामक बालक का जन्म हुआ, वही आगे चलकर स्वामी भीष्म के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उनकी माता पार्वती देवी धार्मिक विचारों की आदर्श महिला थी। माता ने अपने पुत्र में वैदिक संस्कारों का बीज बोया। वह लाल सिंह को महर्षि दयानन्द की तरह हृष्ट–पुष्ट और बलवान बनाना चाहती थीं। अतः प्रारम्भ से ही उन्होंने वैदिक संस्कृति की शिक्षा दी। लाल सिंह के पिता रुढ़िवादी कट्टर पौराणिक थे परन्तु माता ने इस प्रभाव को पूर्णतया समाप्त करने के लिए अथक प्रयास किया। जिसके परिणामस्वरूप वैदिक धर्म को एक क्रांतिकारी व्यक्तित्व प्राप्त हुआ। 'माता निर्माता भवति' बाल सुलभ चेष्टाओं के अतिरिक्त लाल सिंह में गाने की एक विशेष कला थी। वे 11 वर्ष की आयु से ही भजन गाने लग गये थे। सन् 1878 में क्रांतिकारियों से प्रभावित होकर सेना में भर्ती हो गये। पौने दो वर्ष तक सैनिक गतिविधियों में सम्मिलित रहने के पश्चात् बन्दूक लेकर फरार हो गये और क्रांतिकारी रूप धारण कर लिया।

वैराग्य की तीव्रता के कारण उस समय के एक विरक्त संन्यासी योगराज जी से संन्यास की दीक्षा लेकर स्वामी भीष्म के नाम से प्रसिद्ध हो गये। योग साधना के साथ–साथ वेदान्त दर्शन का अध्ययन करना भी प्रारम्भ कर दिया। परन्तु इन्हें मानसिक शांति प्राप्त नहीं हुई। सन् 1886 में स्वामी भीष्म जी को देव दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। सत्यार्थ प्रकाश के गहन अध्ययन ने स्वामी भीष्म की दिशा बदल दी। उन्होंने समाज सुधार और परतन्त्र देश को स्वतंत्र कराने का दृढ़ संकल्प कर लिया। परिणामस्वरूप गांव–गांव जाकर लोगों को रुढ़िवाद से निकालकर वैदिक धर्म की दीक्षा देने लगे। सन् 1920 से 1934 तक स्वामी जी करहैड़ा (गाजियाबाद, उ. प्र.) नामक गांव के पास जंगल में कुटिया बनाकर रहे। यहाँ पर उस समय के प्रसिद्ध क्रांतिकारी सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खाँ, लाल बहादुर शास्त्री, चौ. चरण सिंह आदि यदा–कदा स्वामी जी से मिलकर देश की स्वतंत्रता के लिए भावी योजनाएँ बनाते रहे। यह छोटा सा गांव क्रांतिकारियों की गतिविधियों का एक प्रसिद्ध केन्द्र बन गया। सन् 1936 में स्वामी भीष्म जी ने घरौण्डा, करनाल हरियाणा नामक कस्बे में भीष्म भवन नाम का एक मकान बनवाकर अंग्रेज अधिकारियों के विरोध के बावजूद उस पर राष्ट्रीय ध्वज (तिरंगा) फहरा दिया। सन् 1937 में अपने श्रद्धालु चौ. चरण सिंह का विधानसभा चुनाव में हाथी पर बैठकर पूरे क्षेत्र में प्रचार किया। वही चौ. चरण सिंह स्वतंत्रता के बाद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री और कालान्तर में भारत के प्रधानमंत्री बने। सन् 1938 में आजादी के दिवाने सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में दिल्ली में जो भारतीय नौ–जवान सम्मेलन हुआ उसमें स्वामी भीष्म के "जवानी सफल हो सेना के तैयार से" जो क्रांतिकारी भजन सुना उसके परिणामस्वरूप सुभाष चन्द्र बोस ने द्वितीय महायुद्ध के दौरान आजाद हिन्द फौज का गठन किया था। स्वामी भीष्म ने उत्तरी भारत में विशेषकर ग्रामीण अंचल में घूम–घूमकर क्रांति का बिगुल बजाया जिससे जन–साधारण में राष्ट्रीयता की भावना का संचार हुआ। लोगों ने भारत देश की परतंत्रता की श्रृंखलाओं को छिन्न–भिन्न करने का संकल्प लिया और 15 अगस्त, 1947 को हमारा देश अंग्रेजों की दासता से मुक्त हो गया। अंग्रेजी राज में निराश, हताश जनता को आशान्वित करने के लिए स्वामी जी एक गीत गाया करते थे।

अजी ए जी देश में आप कर दें मुनादी।
देखो देश के दरवाजे पर आ पहुँची आजादी।।

सन् 1962 में भारत–चीन युद्ध के दौरान स्वामी जी का यह गीत सबकी जुबां पर था –

चलो बजी आज रणभेरी, मत करो जवानों देरी।
दुश्मन ने घाटियाँ घेरीं, भयंकर जंग होगा क्या बैठे।।

स्वामी जी ने जहाँ अनेक भजनोपदेशक तैयार किये, भजनों की अनेक पुस्तकें लिखी वहाँ आर्य समाज एवं देश को एक ऐसा क्रांतिकारी व्यक्तित्व दिया जिसने पूरे देश में क्रांति का बिगुल बजा दिया। संसद की दिशा बदल दी। उस क्रांतिकारी व्यक्तित्व का नाम है स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती।

जब स्वामी भीष्म जी 121 वर्ष के हुए तो हरियाणा सरकार ने 21 मई, 1981 को कुरुक्षेत्र, हरियाणा में उनका नागरिक अभिनन्दन किया। इस अवसर पर केन्द्रीय गृहमंत्री ज्ञानी जैल सिंह, चौ. दलबीर सिंह, श्री रामचन्द्र विकल, श्रीमती कुमुदवेन जोशी, हरियाणा एवं उड़ीसा के राज्यपाल, प्रसिद्ध पत्रकार अमर शहीद लाला जगत नारायण, सरदार भगत सिंह के अनुज सरदार कुलतार सिंह, हरियाणा के मुख्यमंत्री चौ. भजन लाल अपने पूरे मंत्रिमंडल एवं विधायकों के साथ वहाँ उपस्थित थे। अनेक आर्य नेताओं, भजनोपदेशकों एवं गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामय उपस्थिति उस भव्य समारोह को चार चांद लगा रही थी।

8 जनवरी, 1984 रविवार के दिन 125 वर्ष की अवस्था में इस महान् विभूति का सुखद निधन हुआ। यद्यपि आज स्वामी भीष्म जी का नश्वर शरीर हमारे साथ नहीं है। परन्तु उनकी यशः पताका वर्षों तक फहराती रहेगी। स्वामी भीष्म जी के क्रांतिकारी व्यक्तित्व से प्रेरित होकर हमारे सुहृद् दानवीर एवं सरस्वती के वरद पुत्र ठा. विक्रम सिंह जी ने उनके अनेक भजनों को संग्रहीत कर 'क्रांति गीत' नामक पुस्तक को छपवाया है जो आने वाली पीढ़ियों का मार्ग दर्शन करती रहेंगी। मैं अपने दादा गुरु स्वामी भीष्म जी को उनके जन्मदिन (6 मार्च, 2018) पर स्मरण करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

मो.:– 9810095061

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी, मर्यादा विहीन समाज के लिए आज भी पथ प्रदर्शक हैं

– ओम प्रकाश आर्य

अमृतसर, 25 मार्च, 2018, महर्षि दयानन्द धाम, आर्य समाज बाजार हंसली, अमृतसर में आज प्रातः मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जन्मदिवस मनाया गया। नवरात्र के प्रथम दिवस से लगातार गायत्री महायज्ञ आचार्य दयानन्द शास्त्री जी के सान्निध्य में होता रहा जिसकी पूर्णाहुति आज की गई। इस गायत्री महायज्ञ में प्रत्येक दिन नये–नये यजमान बनते रहे। सुनीता पसाहन, शशि अरोड़ा, मधु, नीलम, मीना, कोमल, सुनीता वैद्य, कमलेश रानी, नम्रता पसाहन आदि के द्वारा श्री शास्त्री जी ने रामचन्द्र जी के आदर्शों का संकल्प करवाते हुए पवित्र वेद मंत्रों से आहुतियाँ डलवाई। पूर्णाहुति के अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न व्यक्तियों ने भजनों के माध्यम से श्री रामचन्द्र जी के जीवन पर

प्रकाश डाला तथा श्री ओम प्रकाश आर्य प्रधान, आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार ने अपने उद्बोधन में कहा कि करोड़ों हृदयों के सम्राट भगवान राम जिन अद्भुत गुणों के पुंज थे। वे सभी गुण किसी एक महापुरुष में मिलने दुर्लभ है। वेद–वेदांग वेत्ता श्रीरामचन्द्र जी हमें वेदोन्मुख होने की प्रेरणा देते हैं। यज्ञ रक्षक भगवान राम मानव समाज में हवन यज्ञ के प्रति आस्था का भाव जगाते हैं। आज उनके जन्मदिवस पर हमें अपने अन्दर उक्त आदर्शों को अपनाने का प्रयास करना चाहिए। इस अवसर पर राजकुमार, नरेश पसाहन, कर्ण पसाहन, अशोक वर्मा, नरेन्द्र आर्य, कोमल, राकेश आर्य, कुसुम तथा शशि आदि उपस्थित थे।

– दयानन्द शास्त्री

आर्य समाज धौरुआ बाजार (अम्बेडकरनगर) का चतुर्थ वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न

आर्य समाज धौरुआ बाजार का चौथा वार्षिक सम्मेलन 5 से 7 फरवरी, 2018 को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हो गया। सम्मेलन में स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती मथुरा यज्ञ के ब्रह्मा रहे। उन्होंने अपने प्रवचनों में यज्ञ की उपयोगिता, व्यवहारिकता और लाभदायिकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। स्वामी जी के अतिरिक्त आचार्य विमल किशोर ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। राम भगत आर्य भजनोपदेशक सुल्तानपुर ने अपने भजनों के माध्यम से कुरीतियों और पाखण्डों को त्यागने का आह्वान किया। सम्मेलन का आयोजन मुख्य रूप से श्री रामकुशल आर्य और श्री दयाशंकर आर्य ने संयुक्त रूप से किया। सम्मेलन के उपरान्त आर्य समाज का विधिवत गठन स्वामी जी के दिशा–निर्देशन में निम्न रूप से सम्पन्न हुआ। प्रधान श्री दयाशंकर आर्य, मंत्री श्री रामकुशल आर्य व कोषाध्यक्ष श्री रामशब्द आर्य के अतिरिक्त 9 कार्यकारिणी के सदस्य चुने गये।

– राम कुशल आर्य, मंत्री

गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद में एक नया प्रकल्प प्रारम्भ

बिना परीक्षा दिये आर्ष प्रणाली से अष्टाध्यायी (प्रथम वृत्ति तथा द्वितीया वृत्ति) धातु वृत्ति महाभाष्य निरुक्त तथा अन्य वेदांगों और उपांगों के अध्ययन के लिए जुलाई, 2018 से इस गुरुकुल में नया प्रकल्प प्रारम्भ किया जा रहा है। इस योजना के अन्तर्गत प्रवेशार्थी छात्रों के लिए निम्नांकित अर्हताएँ अनिवार्य हैं।

1. वैदिक धर्म के प्रचारार्थ सुयोग्य वेद विदुषी बनने की जिसमें तीव्र उत्कंठा तथा समर्पणभाव हो।
2. छात्रा 10वीं कक्षा उत्तीर्ण हो या तत्समकक्ष योग्यता रखती हो।
3. उपर्युक्त समस्त पाठ्य विषयों का अध्यापन काल सप्तवर्षीय है। इसलिए निर्धारित 7 वर्ष की अवधि से पूर्व छात्रा गुरुकुल छोड़कर नहीं जा सकेगी।
4. छात्रा के माता–पिता या अभिभावक आचार्या की अनुमति से वर्ष में दो बार गुरुकुल में आकर मिल सकेंगे।
5. छात्रा के प्रवेश के तीन माह के अन्दर आचार्या द्वारा उसकी बौद्धिक तथा अनुशासनात्मक वृत्ति का परीक्षण किया जायेगा। इन दोनों दृष्टियों से आचार्या की संतुष्टि और सहमति के अनन्तर ही छात्रा अग्रिम अध्ययन के लिए चयन की जा सकेगी।
6. इस वर्ष 2018–19 सत्र में इस प्रकल्प के अतिरिक्त सामान्य प्रवेश की प्रक्रिया सम्पन्न नहीं होगी। अर्थात् किसी नवीन छात्रा का किसी अन्य योजना के अन्तर्गत प्रवेश नहीं लिया जायेगा।

निवेदिका – आचार्या डॉ. प्रियम्वदा वेद भारती, व्याकर्णाचार्या वेद–नैरुक्ताचार्या
गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद, जिला–बिजनौर, उत्तर प्रदेश
मो.:–9412824424

आर्य जगत् के महान् वीतराग संन्यासी पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (चम्बा) के जन्मदिवस के अवसर पर दयानन्द मठ चम्बा में 5 व 6 मई, 2018 को होगा

विशाल आर्य महासम्मेलन

आप सभी की उपस्थिति प्रार्थनीय है, भारी संख्या में पहुँचकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

– आचार्य महावीर सिंह, अध्यक्ष, दयानन्द मठ, चम्बा (हिमाचल प्रदेश)

आगरा के सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री रमाकान्त सारस्वत जी की बहन श्रीमती विमला शर्मा जी का असामयिक निधन

आगरा के सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री रमाकान्त सारस्वत जी की बहन श्रीमती विमला शर्मा जी का दिनांक 22 मार्च, 2018 को चिकित्सा के दौरान गुरुग्राम के मेदांता सिटी अस्पताल में निधन हो गया, वे लगभग 60 वर्ष की थीं। वे अपने पीछे अपने पति श्री जुगल किशोर शर्मा जी एवं एक बेटा तथा एक बेटी (सभी विवाहित) से परिपूर्ण भरा पूरा परिवार छोड़ गई हैं। श्रीमती विमला शर्मा आर्य समाज के सिद्धान्तों तथा मन्तव्यों में गहरी आस्था रखती थीं तथा समाज सेवा के कार्यों में अग्रणी रहती थी। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन गुरुग्राम के श्मशान घाट में पूर्ण वैदिक रीति से सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में किया गया। उनकी

स्मृति में दिनांक 25 मार्च, 2018 को आर्य समाज डी.एल.एफ.–2, गुरुग्राम, हरियाणा में शोकसभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गुरुग्राम तथा आर्य समाज के गणमान्य महानुभावों ने उपस्थित होकर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सार्वदेशिक सभा परिवार परमपिता परमात्मा से उनकी सद्गति तथा पारिवारिकजनों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

– मधुर प्रकाश शास्त्री, उपमंत्री सार्वदेशिक सभा

आर्य समाज हिरण मगरी ने ऋषि बोध दिवस मनाया

उदयपुर, 14 फरवरी, 2018 : आर्य समाज हिरण मगरी की ओर से महर्षि दयानन्द सरस्वती के बोध दिवस पर विशेष यज्ञ तथा सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि आर्य समाज पिछोली के मंत्री वैदिक विद्वान् डॉ. सत्यप्रिय शास्त्री ने बोध दिवस की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महापुरुषों के जीवन को देखने पर पता चलता है कि छोटी सी घटनाएँ भी क्रांतिकारी परिवर्तन लाकर जगत का कल्याण करती है। ऐसी ही घटना आज के दिन महर्षि दयानन्द के जीवन में भी घटित हुई और उन्होंने समाज में व्याप्त अन्धविश्वास, कुरीतियों को दूर करने के साथ स्वराज की अवधारणा को सबसे पहले समाज के सामने रखा। उसी की परिणित स्वरूप हमें स्वतंत्रता प्राप्त हुई। इस अवसर पर श्री कृष्ण कुमार सोनी, कु. चार्वी एवं कु. भैरवी ने भजन एवं देश भक्ति के गीत प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

– रामदयाल, प्रचार मंत्री

शहीदे आजम भगत सिंह के 88वें वलिदान दिवस पर जयपुर में 'एक शाम शहीदों के नाम' कार्यक्रम सम्पन्न

राष्ट्रवाद की जलती मशाल थे भगतसिंह–'यश'

जयपुर आर्य समाज समन्वय समिति जयपुर व वैदिक महिला मण्डल आर्य समाज मानसरोवर ने शहीदे आजम भगतसिह, राजगुरू व सुखदेव के 88वें बलिदान दिवस पर 'एक शाम शहीदों के नाम' कार्यक्रम ओजपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम विजय पथ मानसरोवर समाज भवन में हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल 'यश' ने क्रान्तिकारियों के जीवन व दर्शन पर प्रकाश डाला। यश ने कहा कि भगतसिंह रूढ़ियों से वगाबती, शोषण विरोधी ,विचारक राष्ट्र वाद की जलती मशाल थे। डॉ सुमित्रा आर्य के संयोजन मे सम्पन्न कार्यक्रम को सैनी नर्सिंग कॉलेज के शिवदयाल विहान, विपिन सारस्वत, अभिषेक गुप्ता, रविकांत जाटव, दीपक गुर्जर, अभिषेक तंवर आदि छात्रों की प्रस्तुतियों ने ओजपूर्ण व मनमोहक वनाया। सुनील अरोड़ा, सुधा मित्तल, जवाहर लाल वधबा, मीना रामपुरा, सरोज गुप्ता, प्रभा त्रिपाठी, सुमन वंशल,मुन्नी, मीरा शर्मा व शुभाषिनी कपूर के क्रान्तिकारी गीत व भाषण हुए। कार्यक्रम की सुव्यबस्था ऊषा आर्य ने संभाली। कार्यक्रम में शहीदो को सलाम व देशभक्ति की भावनाओं का ज्वार छाया रहा। साथ ही उच्च स्तरीय भ्रष्टाचार पर गाने– तरानों से शहादत के अपमान पर रोष व्यक्त हुआ।

नववर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

तहसील आर्य सभा, अमृतपुर, फर्रुखाबाद, उ. प्र. के संयोजन में नववर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस का कार्यक्रम आर्य विद्या मंदिर, रतनापुर, गुड़ेरा के प्रांगण में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य कमल किशोर के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ किया गया। तत्पश्चात् विद्यालय के छात्र–छात्राओं एवं आर्य महानुभावों द्वारा शोभा यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें बच्चे हाथ में झण्डे लिये हुए महर्षि दयानन्द की जय, नववर्ष अमर रहे, आर्य समाज स्थापना दिवस अमर रहे आदि नारे लगाते हुए चल रहे थे। शोभा यात्रा को देखकर लोग काफी प्रभावित हुए। तदोपरान्त सभा का आयोजन किया गया। जिसका संचालन श्री नरेन्द्र जी ने किया। मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य कमल किशोर जी ने नववर्ष व आर्य समाज स्थापना दिवस पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

– आचार्य कमल किशोर

आर्य समाज भगचुरी, पो.–नौसर (उधमसिंह नगर) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक 13 व 14 फरवरी, 2018 को आर्य समाज भगचुरी का 10वाँ वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती मथुरा सुशोभित रहे। स्वामी जी ने अपने प्रवचनों में आर्य समाज के नियमों की विस्तार के साथ व्याख्या की और पंचमहायज्ञों को मानव कल्याण हेतु आवश्यक बताया। इस अवसर पर महात्मा सम्मान मुनि–अमरोहा ने भी अपने प्रवचनों से वैदिक धर्म की सार्थकता को बताया। उत्सव के मुख्य संयोजक श्री हरीश कुमार शास्त्री रहे और उन्होंने अपने सहयोगियों की मदद से उत्सव की सराहनीय व्यवस्था की। उपस्थित जनता ने उत्सव की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

– हरिशंकर शास्त्री, संयोजक

आर्य समाज मयूर विहार, फेस–2 में मनाया गया आर्य समाज स्थापना दिवस

आज दिनांक 18 मार्च, 2018 को आर्य समाज मयूर विहार, फेस–2 में आर्य समाज स्थापना दिवस का कार्यक्रम अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भजन, उपदेश, प्रवचन के अतिरिक्त विद्वानों के द्वारा नववर्ष तथा आर्य समाज स्थापना दिवस पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं. नरेन्द्र वेदालंकार जी ने महर्षि दयानन्द के विचारों को प्रस्तुत करते हुए आर्य समाज स्थापना के महत्त्व पर प्रकाश डाला। प्रवचन के उपरान्त भजनों के द्वारा भी महर्षि का गुणगान किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता भारी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 30–31 मार्च, 2018
प्रकाशन की तिथि : 29 मार्च, 2018
वैदिक सार्वदेशिक
29 मार्च से 4 अप्रैल, 2018
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें

www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

मेघालय के राज्यपाल महामहिम श्री गंगा प्रसाद जी के सार्वदेशिक सभा कार्यालय में पधारने पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उनका भावभीना स्वागत किया तथा आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के विषय में गम्भीर चिन्तन किया।

राज्यपाल महोदय को वेद व सत्यार्थ प्रकाश भेंट करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, उपमंत्री श्री मधुर प्रकाश जी तथा धर्मेन्द्र आर्य जी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में विश्व इतिहास में पहली बार

हरिद्वार चलो

हरिद्वार चलो

दिनांक : 6, 7 व 8 जुलाई, 2018 को

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन का हरिद्वार में होगा भव्य आयोजन

सभी गुरुकुल एवं आर्यजन अभी से तैयारी प्रारम्भ कर दें।

हरिद्वार चलो

निवेदक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

हरिद्वार चलो

"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002
दूरभाष :– 011–23274771, 23260985
ई–मेल :– sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 4100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 18 मार्च, 2018 तक अग्रिम धनराशि जमा कराने पर केवल 2800/- रुपये में प्राप्त कर सकेंगे।

4100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 200/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष :- 011-23274771, 23260985 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

प्रो० विडुलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विडुलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।